पाठ - 7
तयम्मुम

الدرس السابع - هندي
التيمم

सफ़र में या हज़र में दानों जगहों पर तयम्मुम जायज़ है। शर्त यह है कि निम्नलिखित वजह हो, तो वुज़ू और स्नान दोनों के लिए तयम्मुम जायज़ है।

1. जब पानी न मिले, या पानी मिले मगर इतना कम हो कि वह पाकी हासिल करने के लिए काफ़ी न हो। अलबत्ता पहले पानी तलाश करे। उसके बाद भी पानी न मिले तो वह तयम्मुम करेगा या पानी तो उसके पास हो, या पानी के पास पहुंच सकता हो मगर उसे भय हो कि उसकी जान य माल को उससे नुक़्सान पहुंच सकता है।

2. यदि शरीर के कुछ हिस्सों में घाव हो और पानी लग जाने से नुक़सान की आषंका हो तो उस पर एक बार मसह कर ले। अपने हाथ को भिगा ले और उस हिस्से पर फेर ले। यदि मसह से भी नुक़्सान की आषंका हो तो अन्य अंगो को धो ले मगर उस अंग का तयम्मुम करेगा।

3. यदि पानी या मौसम बहुत ठंडा हो और पानी के इस्तेमाल से बीमारी का भय हो।

4. उसके पास पानी मौजूद हो, लेकिन उसे पीने या खाना बनाने की ज़रूरत हो तो ऐसी सूरत में तयम्मुम करेगा।

तयम्मुम का तरीक़ा

तयम्मुम का तरीक़ा यह है कि इंसान अपने दिल से नीयत करे और अपने दोनों हथेलियों से एक बार ज़मीन पर मारे। उसके बाद अपने चेहरे पर मसह करे और फिर अपने बायें हाथ की हथेली के अन्दुरूनी हिस्से को दाहिने हाथ के ऊपरी हिस्से पर फेरे। और फिर दाहिनी हथेली के अन्दुरूनी हिस्से को बायें हाथ के ऊपरी हिस्से पर फेरे।

तयम्मुम भी उन चीज़ों से टूट जाता है जिन से वज़ू टूट जाता है। उसी तरह जिसके पास पानी न रहा हो, उसे नमाज़ से पहले पानी मिल जाए, या नमाज़ के बीच पानी उपलब्ध हो जाए तो तयम्मुम टूट जायेगा।

यदि नमाज़ पढ़ लेने के बाद पानी मिले तो उसकी नमाज़ सही हो जायेगी और उसका दोहराना ज़रूरी नहीं होगा।